IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 1, Issue 1, January 2020

èkeZ'kkL=h; ijaijk vkSj ledkyhu lekt esa ukjh% Le`fr;ksa ds vkyksd esa iqufikB

Mk- jhrk flag
vfl0 izksQslj bfrgkl
ia0 fMr jkey[ku “kqDy jktdh; ih0 th dkyst] vkykiqj] vEcsMdjuxj
ritasingh806@gmail.com

lkjka'k

प्रस्तुत शोध पत्र "धर्मशास्त्रीय परंपरा और समकालीन समाज में नारीः स्मृतियों के आलोक में पुनर्पाठ" भारतीय धर्मशास्त्रीय साहित्य और आधुनिक सामाजिक यथार्थ के मध्य संवाद स्थापित करने का एक प्रयास है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि स्मृति–ग्रंथों—विशेषतः मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति तथा नारद स्मृति—में नारी की जो धार्मिक, सामाजिक और वैधानिक स्थिति प्रतिपादित की गई है, वह किस प्रकार सम्मान और मर्यादा, अधिकार और नियंत्रण के द्वंद्वात्मक स्वरूप में विकसित हुई। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि धर्मशास्त्रीय परंपरा में नारी को सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी और गृहलक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की गई, किंतु साथ ही संरक्षणवादी दृष्टिकोण के माध्यम से उसकी स्वायत्तता को सीमित भी किया गया। अतः नारी की स्थिति को एकांगी दृष्टि से न देखकर ऐतिहासिक–सामाजिक संदर्भों में समझना अधिक उपयुक्त है।